॥ अर्हं नमः ॥

आत्मकथा
ADVENTURE SERIES

Jai Sri Krishna

युगप्रधानाचार्यसम प.पू.चन्द्रशेखर वि.म.सा.

॥ जय श्री कृष्ण ॥

वृंदावन.....!

- गोपीयों और कृष्ण के पवित्र प्रेम का पुनित स्थान...
- जहां के कण-कण में कृष्ण की प्रतिध्वनी सुनाई देती है...
- वैसे स्थान को खुदका निवास स्थान बनाने वाले एक कृष्ण भक्त की अनुभव गाथा...
- परमात्मा और भक्त की नजदीकता को नजदीकी से अनुभव कराने वाली कथा यानि

॥ जय श्री कृष्ण ॥

आत्मकथा ADVENTURE SERIES

सीमंधरा

वंदे मातरम्-वंदे शासनम्

चंदनबाला व सुलसा

आत्मकथा - 1

आत्मकथा - 2

धन धन्नो अणगार

Jai Shri Krishna

For More Details & Online Books
SCAN THIS

आत्मकथा
ADVENTURE SERIES

Jai Sri Krishna

युगप्रधानाचार्यसम प.पू.चन्द्रशेखर वि.म.सा.

दिव्य आशीर्वाद

सच्चारित्र चुडामणि, कर्म साहित्य निष्णांत, सिद्धांतमहोदधि
पू.आ. श्री प्रेमसूरीश्वरजी म.सा. एवं उन के विनेय
युगप्रधानाचार्यसम शासन प्रभावक गुरुदेव
प.पू.श्री चन्द्रशेखर विजयजी म.सा.

* निश्रादाता *

सिद्धांतदिवाकर गच्छाधिपति आ.श्री जयघोषसूरीश्वरजी म.सा.
सरलस्वभावी प.पू.आ.श्री हंसकीर्तिसूरीश्वरजी म.सा.

लेखक

मुनिराज श्री गुणहंसविजयजी म.सा.

Copies - 2,000

अनुवादक– उत्तमाध्यापिका कल्पनाबहन

* प्रकाशक *

कमल प्रकाशन ट्रस्ट

102–ए, चन्दनबाला कोम्पलेक्स, आनंद नगर,
पोस्ट ऑफिस के सामने, भठ्ठा, पालडी, अहमदाबाद – 7.

* प्राप्ति स्थल *

नरेश जैन
373, Mint Street, Rajendra Complex,
(Near Mahashakthi Hotel)
Chennai - 600 079. Ph: 9841067888

मनोज जैन
Shree Adinath Enterprises
7, Perumal Mudali Street, Sowcrapet,
Chennai - 600 079. Ph: 9840398344

Design and Printed by:

Divyam
imagination alive

Chennai. Ph : 044-49580318
9884232891/8148836497

अर्हं नमः

जिस आत्मा में मोहनीय के क्षयोपशम से छोटा सा भी गुण प्रगट हो, वो बाहर से हिन्दु - मुस्लिम - क्रिस्चन आदि कोई भी हो, परमार्थ से वो जैन ही है।

अभिजितभाई हमारे एक ऐसे ही जैन है।

विशालदृष्टि से पुस्तक पढोगे, तो खुशी होगी, यदि दृष्टि संकुचित होगी, तो ----

युगप्रधानाचार्यसम पूज्यपाद
गुरुदेव श्री चन्द्रशेखरविजयजी
का शिष्य गुणहंसविजय
ता. 8-5-18
शाम को 4.25
गुजराती वाडी
चेन्नई।

''गुरुजी! नीरव भाई मिलने आये थे, साथ में किसी भाई को भी लेकर आये थे। आप आराम कर रहे थे, इसलिए थोडी देर राह देखकर चले गये। कह रहे थे कि 'रात को उस भाई को साथ लेकर आयेंगे'' क्षमाश्रमण विजयजी ने मुझे जानकारी दी।

ता. 22.1.18 को दोपहर का समय....

सुबह ही नीतकुमार की दीक्षा मरलेचा गार्डन में हो गयी थी। उसके बाद 10 से 12 बजे, नजदीक के गुरु श्री शांति कॉलेज में मेरे गर्भपात के विषय के पुस्तक का विमोचन भी हो गया था। हम जैन कोलोनी के बंगले जैसे उपाश्रय में उतरे हुए थे। दीक्षा हुई थी, जयजिनेन्द्र अपार्टमेन्ट की निश्रा में....

आज थकावट बहुत ज्यादा लग रही थी, इसलिए दोपहर को मैं लेट गया। एक घंटा आराम कर लेने के बाद जब जागा तब मुनिवर ने सबसे पहले नीरवभाई का समाचार दिया।

पिता चंद्रकांतभाई के उत्तम कोटि के संस्कारों को पाकर बडे हुए नीरवभाई की प्रामाणिकता के उपर मुझे इतना भरोसा है कि उनको कोई भी प्रकार की पूँछताछ के बिना 1

करोड रूपए देने में आये, तो एक रूपये की भी चिंता करने की आवश्यक्ता नहीं है। संसारी के वेश में साधु जैसी जिंदगी जीनेवाले 38 वर्ष के इस युवक के लिए मैं गौरव अनुभव करता हुँ। मेरे इन शब्दो से आप उनको नहि पहचान सकते, परंतु उनसे परिचय करोगे तो पता चलेगा कि मैं बहुत कम बोल रहा हुँ। इनके पापा चन्द्रकांतभाई अपनी 90 वर्ष की मम्मी की सेवा जबरदस्त उल्लास भाव के साथ करते है।

''कौन भाई थे?'' मैने पूछा।

''पता नहीं, परंतु बहुत विचित्र दिख रहे थे। धोती और कुर्ता पहने हुए थे, गले में माला थी, हाथ में भी माला थी, सिर पर चोटी थी, मुख तेजस्वी था, अगर कपडे लाल-केसरी पहने होते तो संन्यासी ही लगते, परंतु कपडे सफेद रंग के थे।''

मुझे उस भाई से मिलने की इच्छा हुई.. वैसे भी नीरवभाई जिस भाई को मेरे पास लेकर आये हो वो भाई ऐसा-वैसा तो नहीं ही होगा।

आखिर रात को मेरी इच्छा पूरी हुई। दोनों साथ में आये।

किसी को भी आश्चर्य में डाल दे, ऐसी उस

भाग्यशाली की बाते सुनकर मुझे लगा कि *'एक मिथ्यात्वी दिखते व्यक्ति में इतने सब गुण हो सकते है, तो सम्यकत्वी-श्रावक और साधु ऐसे हम में कितने सारे गुण होने चाहिए ना?'*

''म.सा. !'' नीरवभाई ने मुझे उनकी पहचान करवाई। ''ये अभिजितभाई है, उम्र 47 वर्ष! सालों पहले ये कंपनी में मेरे बॉस थे। मैने इनके अन्डर में काम किया हुआ है। ये मूल कलकत्ता के है। आपको **(IIM)** शिक्षण संस्था के बारे में पता ही होगा। पूरे भारत में उसकी सिर्फ 4 शाखाएँ है, उसमें से कलकत्ता में आयी हुई शाखा में से इस भाई ने डिग्री ली है।''

मैं कानो से सुन रहा था और आँखो से उनको देख रहा था। शांत मुख मुद्रा, प्रभावशाली मुखाकृति, वैराग्य का तेज... सभी का मिश्रण था।

''तो फिर अभी ऐसे वेश में क्युँ?'' मैने प्रश्न पूछा!

''उसके पीछे एक इतिहास है साहेबजी! अनुकूलता हो तो वो सुनने जैसा है'' नीरवभाई ने कहा। मैंने तुरंत हाँ कह दिया और अभिजित भाई ने कहना शुरु किया।

''25 वर्ष पहले की यह बात है। आईआईएम में से पास होने के बाद मुझे भी सभी की तरह ज्यादा पैसा कमाने की, मेरा स्टेटस बनाने की तमन्ना तो थी ही। जब कि मेरे घर में पैसे की कोई कमी नहीं थी। 25 वर्ष पहले भी हम करोडपति थे, परंतु खुद कमाकर अपने पैरो पर खडे होने की भावना तो हर एक व्यक्ति को आज के जमाने में होती ही है।

उन दिनों मैं अमेरिका में था। धून लगी हुई थी स्टेटस की... संपत्ति की। परंतु एक ही प्रसंग ने मेरी पूरी जिन्दगी बदल डाली।

अमेरिका के मेनहटन टॉवर पर त्रासवदी हमला हुआ। हजारों लोग मर गए, हजारो दब गये। अरबो रूपयो का नुकसान हो गया। संपूर्ण विश्व के पिता कहलाने वाले अमेरिका की इज्जत पानी में मिल गई। उनकी भरोसेमन्द जासुसी संस्था **(F.B.I)** का खून पानी एक हो गया, सभी सोते हुए पकडे गये।

इस प्रसंग का मेरे उपर बहुत असर हुआ।

'मैं उस समय टॉवर मे होता तो?'

ये तो मेरा पुण्य है कि उस समय मैं वहाँ नहीं था, परंतु अगर मैं वहाँ होता तो? तो ये पुण्य मेरे पास सिर्फ ईश्वर की कृपा से ही आया है।

इसलिए, ईश्वर की आराधना करना ही मेरे लिए श्रेष्ठ है। जो मेरे परम उपकारी है, जो मेरे श्रेष्ठ रक्षक है, उनको छोडकर मैं किसके भरोसे जीउं।

बस मेरी, विचारधारा आगे बढती गई।

अब संपत्ति का मोह नहीं रहा, अब स्टेटस बनाने की इच्छा मर गयी। और मैने वापसी का टिकट ले लिया हिन्दुस्तान का।

घर पहुंचा तो सही, परंतु मुझे खुशी कहाँ? मुझे तो ईश्वर के चरणो में जाना था? आखिर मैंने रास्ता पकड लिया। बचपन से मुझे भगवान कृष्ण के उपर विशेष आदर था। बस मैंने उनकी भक्ति को अपने जीवन का लक्ष्य बना दिया।

इस तरफ कंपनी के तरफ से मेरी बदली हो गयी हैदराबाद में। परंतु अब संसार की ओर मेरा राग खत्म हो गया था। अब क्या करना? इसका फाईनल निर्णय अब तक नहीं लिया था, परंतु मन में ये संकल्प कर लिया था कि *'मेरे हृदय सिंहासन पर मेरे परमेश्वर कृष्ण को बिठाने के बाद, अब वहाँ संसार की कोई भी स्त्री तो क्या... देवलोक की अप्सरा को भी मैं स्थान नहीं दूँगा, अर्थात् अब मैं शादी नहीं करुँगा।'*

तभी घर से समाचार आए कि "तेरी सगाई कर दी है...तुं कलकत्ता पहुँच।"

मैं चकरा गया, घबराया, मेरे लिए ये वस्तु एकदम ही अशक्य बन गई थी।

मैं पहुंचा कलकत्ता। लडकी से मिलना हुआ, कुदरत भी मानो मेरी परीक्षा लेना चाहती थी।

वो लडकी भी रूपरूप की भण्डार! स्वभाव से एकदम नम्र!

एक ही नजर में कोई भी लडका शादी के लिए हाँ कह दे, ऐसी वो लडकी! और परिवार भी समृद्ध!

परंतु, ये सब लोभावनी परिस्थिति मुझे ललचा न सकी। मैं एकदम मजबुत रहा। मैंने उस लडकी को स्पष्ट मना कर दिया। मुझे लगा था कि *'मेरे स्पष्ट ना कहने के बाद तो वो लडकी ही कह देगी कि मुझे इसके साथ शादी नहीं करनी है।'* परंतु वो तो विचित्र निकली, उसने तो जीद पकड ली कि 'मैं इसी लडके के साथ शादी करुंगी।'

माँ बाप का आग्रह बढने लगा। ना बोलने का कारण पूछने लगे, परंतु मैं क्या जवाब दूं? आखिर मुझे कहना पडा कि

''मुझे संसार में कोई रस नहीं है। लडकी में कोई कमी के कारण मैं ना कह रहा हुँ ऐसा आप मत समझना। मेरी भावना तो धीरे धीरे धर्म में आगे बढकर आखिर में संन्यास लेने की है।''

माँ बाप चकरा गये। जोरदार आँसुओ के साथ रोने लगे। जवान लडके की ऐसी बात को बिचारे कैसे सहन कर सकते? उनके अरमान तो चकनाचूर हो गये ना।

उन्होंने मुझे धमकी दी कि ''अगर तुमने शादी के लिए हाँ नहीं कहा तो हम दोनो गले में फाँसी लगाकर मर जायेंगे। आत्महत्या कर लेंगे।''

मेरे लिये बढा धर्म संकट खडा हो गया।

माँ-बाप मेरे कारण आत्महत्या करे, ये तो कैसे हो सकता है? और संसार की असारता का अनुभव कर लेने के बाद अब मैं शादी कर लूँ, ये भी नहीं हो सकता था। मैने कृष्ण भगवान को बहुत प्रार्थना की कि 'बचाना मुझे...'

जैसे कि मेरी प्रार्थना सुनी हो वैसे ही अचानक ही मेरे माँ-बाप को विचार आया कि 'मैं जिस संन्यासी के संपर्क में था, उनके पास जाकर बात करें।' और वो पहुंच गये उस संन्यासी के पास।

मेरा पुण्य जोर कर रहा था, इसलिए उस संन्यासी ने मेरे माँ बाप को समझाया कि ''देखीये... आपके लडके का वैराग्य सचमुच सच्चा होगा, तो शादी करके ये और वो लडकी दोनो दु:खी होंगे। ऐसा किस लिए कर रहे हो आप?

अब ये वैराग्य सच्चा है या नही ये जानने के लिए 6 महिने जाने दीजिये। अगर अभी कामचलाउ वैराग्य होगा तो तो वह हवा मे उड जाऐगा और अगर सच्चा वैराग्य होगा तो कोई इसे तोड नही सकेगा। 6 महिने के बाद भी अगर ये इसी दृढता के साथ यही जवाब दे कि 'मैं शादी नही करुंगा' तो फिर इसको इसके रस्ते चलने देना, रोकना नहीं।''

संन्यासी की बात मम्मी पाप के मन में बैठ गयी। उन्होंने उस लडकी को सारी बात बताई और कहा कि ''तुं राह देख सकती है? नहि... तो तुं किसी और के साथ शादी कर सकती है'', परंतु उस लडकी ने इंतजार करने का स्वीकारा।''

''क्या नाम था उस बहन का?'' सच्ची कहानी में हरेक पात्रो के सच्चे नाम लिखने की इच्छा से मैंने उनसे बीच में नाम पूछा? ''म.सा.! सच कहुं तो मुझे उसका नाम याद ही नहीं,'' अभिजित भाई ने कहा।

''ऐसा कैसे हो सकता है? आपने जिससे सगाई की है और उसी एक लडकी के साथ आपका परिचय हुआ, फिर भी आप कहते हो कि मुझे पता नही, याद नहीं?'' मैने तो यह प्रश्न पूछ ही लिया।

''म. सा. ! मैने इनका नाम जानने की भी तकलीफ नही की थी, क्योंकि आखिर तो मुझे खिसकना ही था, फिर इस तरफ मेरा ध्यान क्यो होगा? बातों, बातों में उसका नाम सुना होगा, परंतु मेरा लक्ष्य उस ओर नही गया,'' अभिजित भाई ने जवाब दिया।

मुझे अतिशय आनंद और आश्चर्य हुआ। ऐसे काल में, चारो तरफ काम विकार की धधकती जिंदगीओं के काल में एक जवान लडका सगाई की हुई लडकी का नाम जानने में भी उत्सुक नही था। यह उसका कैसा वैराग्य!

अभिजित भाई आगे बोले....

''उस लडकी ने 6 महीने के बदले 1 वर्ष तक इंतजार किया, परंतु मेरी ना तो ज्यादा से ज्यादा दृढ़ बनती गयी। मेरा वैराग्य ज्यादा से ज्यादा पक्का होता गया। इसलिए आखिर उस लडकी ने थककर मेरे साथ की सगाई तोड दी।

हाश! मुझे उस वक्त परमशांति की अनुभूति हुई। *अच्छा हुआ टूट गया जंजाल...* फिर तो मां बाप ने भी जीद करने का छोड दिया। मेरी भावना के आगे वे झुक गये।

मुझे कृष्ण के परमपवित्र भक्ति के स्थानभूत वृंदावन से सतत लगाव था। मैं वहाँ गया। व्रजभूमि के बीच आए वृंदावन में श्रीकृष्ण के छोटे-बडे कुल 5000 मंदिर है।''

''क्या? 5000 ?'' मेरे मुख से आश्चर्यजनक शब्द निकले।

''हाँ। साहेबजी! 10 कि.मी के **Area** में फैले उस वृंदावन में 5000 मंदिर है। कृष्ण की भक्ति में पागल बने भक्तो ने छोटी-छोटी मूर्तियो के छोटे-छोटे मंदिर बना रखे है, और वे अपने भगवान पर अपनी पूरी जिंदगी न्योछावर करके बैठे है। कालेज के लडके जिस प्रकार लडकीयों के पीछे पागल बनते है, उसी प्रकार ये परम भक्त श्रीकृष्ण के पीछे पागल है। न तो उनको खाने का होश... न कपडे का होश! बस कृष्ण के विरह में रोना, ये ही जैसे उनका स्वभाव बन गया है। दुनियाँ में जिन्दा होते हुए भी दुनियाँ में नही है, अरे! जिन्दा होते हुए भी मर चूके हो जैसे इस संसार के लिए।

म. सा.! संसार में जैसे प्रेम में पागल बने हुए लोग अपनी इच्छा पूरी न हो तो वे काम-विकार के अतिरेक में बेहोश हो जाते है, उसी प्रकार ये भक्त कृष्ण के विरह में इतने ज्यादा दु:खी हो जाते है कि वे सचमुच बेहोश बनकर गिर पडते है। हमको लगता है कि कोई रोग हुआ होगा, कोई **Fits** आई होगी... परंतु हम तो अपनी आंखो से ऐसा ही देखते है। प्रभु के प्रति प्रेम में इस हद तक कोई पागल बन सकता है ऐसी तो हम कल्पना भी नही कर सकते। अपनी छोटी बुद्धि रूपी स्केल से हम इतने विराट समुद्र को मापने जाएँगे, तो समुद्र के साथ अन्याय ही होगा ना?

म. सा.! इसलिए मेरी ये सब बातें शायद आपको गप्पे लगे, मैं सभी बातो को बढा चढा कर बोल रहा हुँ ऐसा लगे... परंतु साहेबजी! कभी वृंदावन जाएँगे तो आपको ऐसे भक्त देखने को मिल जाएँगे। बस तभी आपको लगेगा कि मेरी बाते कितनी सच्ची है? हाँ! मैं ये नही कहता कि सभी भक्त ऐसे ही है, परंतु ऐसे थोडे बहुत तो है ही ना?''

अभिजित भाई की बाते मैं एकाग्र बनकर सुन रहा था। वैसे तो ऐसी बातो पर श्रद्धा नही ही हो, **परंतु दशवैकालिक**

निर्युक्ति में काम विकार की जो दस अवस्थाएँ बतायी है, उसमे होश न हो उस अवस्था से लेकर अंत में मृत्यु-अवस्था भी बतायी है। अर्थात् किसी के विरह में ये विरह की वेदना इतनी हद तक पहुंच तो सकती ही है।

अरे! **कादंबरी** में भी महाश्वेता राजकुमारी के विरह में कपिंजल की मृत्यु दर्शायी है। मतलब **हमने जो अनुभव नही किया, वो वस्तु इस दुनियां नहीं है,** ऐसा तो नही ही मान सकते है ना? हमने कहाँ अफ्रीका, अमेरिका देखा है, परंतु दूसरो के कहने पर मानते ही है ना?

अभिजित भाई ने आगे बोलना प्रारंभ किया...

''वहां कितने लोग तो मधुकरी है'', यह शब्द सुनकर मुझे आश्चर्य भी हुआ और खुशी भी हुई, क्योकि ये शब्द तो हमारे यहां भी बोला जाता है। सच कहे तो ये अपना ही शब्द है। मधुकर यानि भंवरा! भंवरा जिस प्रकार फूलो में से थोडा-थोडा रस चुसता है, फूलो को भी पीडा नही पहुंचाता और अपना भी पेट भर लेता है। उसी प्रकार मुनि भी घरो में से थोडी-थोडी भिक्षा वहोर कर अपना भी पेट भर लेते है और लोगो को भी दुःख नही पहुचाते।

आज यही शब्द एक कृष्ण भक्त बोल रहा है और उनमे भी ऐसी मधुकरी भिक्षा है। वैसे तो हमारी मधुकरी और उनकी मधुकरी में जमीन-आसमान का फर्क है.....

''थोडे भक्त मधुकरी नही करते, परंतु कोई उनको खाने पीने का दे, अथवा सीधा सामान दे तो खाते है, नहि तो भूखे भी रहते है।

म.सा.! मुझे उन कृष्ण भक्तो की भक्ति करने की तीव्र इच्छा हुई, परंतु अभी तो मैं खुद कंपनी में जॉब ही कर रहा था। और मुझे पैसों से ही भक्ति करने की इच्छा थी।

कंपनी की तरफ से मेरा ट्रांसफर चेन्नई में हुआ, तभी ये नीरवभाई मेरे सहायक बने। ये भले ही मेरे नीचे काम करते थे, परंतु स्वभावादि के कारण ये मुझे अत्यंत अनुकूल, अर्थात् मेरे परममित्र बन गये थे। इन्होंने मुझे 18 हजार रूपए भाडावाला बडा फ्लेट दिलवाया। परंतु थोडे ही दिनों में मुझे लगा कि 'मुझे अकेले को इतने बडे फ्लेट की क्या जरुरत है। फालतु में 18 हजार रूपये क्यु वेस्ट करने।' मैंने नीरवभाई से बात की कि 'मुझे तो मात्र एक ही रूम चाहिए, जहाँ मैं अकेले रह सकुं ' ...

और म.सा.! आपको पता होगा कि बहुत-सी बिल्डिंगो के टैरेस पर छोटी सी एक रूम होती है। सामान्य इन्सान उसे भाडे पर ले लेता है। मैने भी ऐसी एक रूम 4000 रू के भाडेवाली ले ली। इसका फायदा यह हुआ कि हर महिने मेरे 14000 रूपए बचने लगे। और मैने वो बचे हुए सारे पैसे वृंदावन में भक्तों की सेवा के लिए भेजना शुरु कर दिया। फिर तो मुझे सेवा का व्यसन हो गया।

अभी तक तो मैं मेरी कार में ओफिस जाता था, परंतु अब मुझे विचार आया कि *'अपने लिए क्युं कार का खर्चा करना? बस है ना?'* और मैंने कार बेच दी। आये हुए पैसे भेज दिये वृंदावन... और बस में ओफिस जाना चालु कर दिया...

फिर तो मैंने ओफिस भी चलकर जाने का चालू कर दिया। वैसे तो इसमे कोई ज्यादा फर्क नही पड रहा था, फिर भी एकदम **Simple** लाईफ जीने की मेरी भावना थी। इसलिए मैंने जहाँ तक हो सके बस का उपयोग भी बंद कर दिया।

जिंदगी बीत रही थी...

एकबार मेरे गुरुजी को भावना हुई कि गरीबों को उपयोगी हो, इसलिए एक बडी हॉस्पिटल बनानी है। वर्षो पहले

की यह बात है। पैसे इकट्ठे होते गये, फिर भी 50 लाख रूपए कम पड रहे थे। मेरे मन में एक ही विचार था, कि 'गुरुजी की भावना पूरी होनी ही चाहिए।' मैंने ये 50 लाख की जवाबदारी ले ली। पैसे तो मेरे पास नहीं थे। परंतु मैंने बैंक से हॉस्पिटल के लिए लोन लिया और नौकरी की कमाई में से लोन भरता गया। अभी बस, एक दो लाख चूकाने बाकी है।''

''आपको इस प्रकार उधारी में काम करने में टेंशन नहीं हुआ?'' मैंने बीच में ही पूछ लिया।

''नहीं साहेबजी! गुरुजी का काम है, इसलिए उनका आशीर्वाद तो मिलने ही वाला था ना! और मेरी इन्कम के आधार पर मैंने गणित कर लिया था कि इतने वर्षो में मैं तो रकम चूका लुँगा... इसलिए मेरे लिए टेंशन वाला कोई कारण नहीं था।

धीरे-धीरे मेरा रस कृष्ण भक्ति में बढने लगा। मैंने नौकरी छोड दी, वृंदावन में ही मेरा निवास होने लगा।

अभी आपके सामने मेरा ये जो वेष है, सिर पर चोटी, कुर्ता-धोती, हाथ में माला, गले में माला, ये सब कुछ वृंदावन की ही भेंट है। मैं अभी तक संपूर्ण संसार त्यागी नहीं बना,

संन्यासी नहीं बना, परंतु मेरी मेहनत तो उसके लिए ही है।''

हमारा इतना वार्तालाप पूरा हुआ, उन्होंने विदाई ली।

दूसरे दिन मेरे कहने से वो 10 बजे प्रवचन में आये। लगभग 100 लोगों के सामने अपने अनुभव उन्होंने पेश किए। मैंने उनसे कहा कि इंग्लीश में भी बोलना, तो वे इंग्लीश में भी बोलने लगे। मेरा आशय यह ही था कि लोगों को ऐसा न लगे कि ये तो अनपढ है- गंवार है।

प्रवचन के बाद वो वापस मुझसे मिलने आये, नीरवभाई भी साथ में ही थे।

''म.सा. !'' नीरवभाई बोले ''ज्यादातर तो ये वृंदावन में ही रहते है, परंतु मैने ही उनको स्पेशल यहां बुलाया है। मेरी इच्छा है कि 4-5 वर्ष में निवृत्त होकर फिर सिर्फ धर्म ही करना। शक्ति अनुसार शासन सेवा करनी है। संपूर्ण समय शासन के लिये देना है, परंतु उसके लिए थोडा धन कमाना जरुरी है।

अभी तो मैं जॉब करता हुँ, उस हिसाब से 4-5 वर्ष में निवृत्त होना शक्य नहीं है।

इसलिए मैने जॉब छोडकर धंधा करने का विचार किया

है। उसके लिए इनकी सहायता की मुझे जरुरत पडी। हम दोनों भागीदार बनकर धंधा करेंगे, तो बहुत अच्छा होगा और इन्होंने मेरी बात स्वीकाार ली है।''

38 वर्ष के गंभीर, शांत नीरवभाई की बात सुनकर मुझे बहुत ही खुशी हुई। इतनी छोटी उम्र में निवृत्त होने की भावना कितनो को? वो करोडपति-अबजोपति 60-70 की उम्र वाले भी कहां निवृत्त होने को तैयार है? इतना सब कुछ होते हुए भी वे और धंधा बढाते है, फेक्टरीयाँ डालते है, बिजनेस में कॉम्पटिशन करते है।

''साहेबजी!'' नीरवभाई बोले ''हम दोनो व्यापार तो करेंगे, परंतु हम दोनो में जमीन-आसमान का फर्क है। जो भी कमाई होगी, वो मैं तो मेरे लिए और मेरे परिवार के लिए इकठ्ठा कर रहां हुँ जब कि इनका तो एक ही संकल्प है कि **इस बेष में जितनी भी कमाई होगी बो सब बृंदाबन के संतो की सेबा में भेज देनी।** यद्यपि इनका परिवार नहीं है, तो भी पैसे का ममत्व किसको नहीं होता साहेबजी! धन्यवाद है अभिजित भाई को।''

नीरवभाई खुशी से रो पडे।

अचानक ही अभिजितभाई ने खुद के थैले में से मिट्टी का एक टुकडा निकाला और मुझे कहा, "साहेबजी! मैं आपको एक भेट देना चाहता हुँ आप लोंगे ना?"

"क्या है यह?" कुतूहल से मैने पूछा!

"वृंदावन की याद! वृंदावन की पवित्र मिट्टी!" उनके चेहरे पर अनोखी चमक थी।

वैसे तो मुझे वो मिट्टी लेनी नहीं थी। मैने अपने पूज्य गुरुदेव का फोटो भी परिग्रह समझकर नहीं रखा, तो यह मिट्टी रखने का तो कोई सवाल ही न था। फिर भी किसी की भावना को एक झटके के साथ तोडने की मेरी ताकत नहीं थी, इसलिए मैने जवाब दिया कि "ठीक है, मै रख लेता हुँ।" मैने सोचा की एक बार उनका मन रखने के लिए ले लेता हुँ फिर किसी श्रावक को दे दुंगा।

"ये मिट्टी का ढेला आप साथ में ही रखते हो?" मैने पूछा...

"हां जी! जब भी मै वृंदावन छोडता हुँ तब..."

"क्यों?"

"कृष्ण की याद में..." बोलते-बोलते उनकी आंखे गीली हो गई। एक भक्त हृदय बोलने लगा, "वृंदावन तो कृष्ण

की भूमि है। वहां तो ढेले-ढेले में नहीं, परंतु अणु-अणु में कृष्ण छाये हुए है। इसलिए वहां तो मुझे पल पल कृष्ण की याद आती ही रहती हैं। परंतु जब वृंदावन से बाहर निकलता हुँ तब मुझे लगता है कि 'मैं कृष्ण से दूर जा रहा हुँ।' और ये विरह, ये वियोग मुझसे सहन नहीं होता है। परंतु किसी कारणवश वृंदावन छोडना पडे तब कृष्णजी की यादगिरी के रूप में वहां की मिट्टी साथ में ले लेता हुँ। सुबह स्नान करने के बाद इस मिट्टी से ही मस्तक पर तिलक करता हुँ।''

मैने देखा कि उनके मस्तक पर यह मिट्टी तिलक के रूप में शोभायमान थी... उसके कारण उनका मुख ज्यादा देदिप्यमान लग रहा था।

''इस मिट्टी के लिए भी हमारे धर्म में एक बहुत ही रसप्रद घटना है, आप सुनेंगे ?'' बीचमें श्वास लेकर भाईने बोलना चालु किया।

कृष्णजी बचपन में वृंदावन में ही रहे थे। राधा वगेरे गोपीओं के साथ रास खेलते थे। राधा वगेरे तो कृष्णजी के पीछे पागल ही थे। बाँसुरी बजाकर काले कन्हैया ने गोरी गोपीओ को मुग्ध बना दिया था।

एक दिन ऐसा आया कि, कृष्ण ने वृंदावन छोड दिया।

गोपीयां वृंदावन न छोड सकी। उनकी मर्यादा थी। बस उसके बाद तो कृष्ण ने रूक्मणी-लक्ष्मी आदि राजकुमारीयों के साथ शादी कर ली। द्वारका नाम की नयी राजधानी बसायी। महान राजाधिराज बन बैठा। वृंदावन के सामने उसने कभी एक दृष्टि भी नहीं डाली, कभी एक डग भी नहीं भरा।

फिर भी अपनी रानीयो के साथ रहते हुए भी कृष्ण वृंदावन और गोपीयो को बहुत-बहुत याद करते थे। कोई भी बात हो तो वे कहते कि 'मेरा वृंदावन तो ऐसा , मेरी गोपीयां तो ऐसी...'

रूक्मणी-लक्ष्मी आदि रानीयों को बहुत दुःख हुआ कि 'क्या कमी है हमारे में ? क्या हमारे में समर्पण नहीं है? क्या हमारे पास रूप नहीं है? क्यों हम सेवा कम कर रहे है? फिर भी ऐसा क्युँ? हम हमेशा साथ में फिर भी हम दूर? और गोपीयों सतत दूर फिर भी हृदय में सबसे नजदीक? ये किस तरह का पक्षपात? भगवान जैसे भगवान भी अगर पक्षपात करेंगे तो दूसरो की बात ही क्या करनी?'

दुःखी-नाराज हुई रानीयो ने आखिर नारदजी से शिकायत की। नारदजी को भी उनकी बात सही लगी। इसलिए उन्होंने नारायण को सब बात कहीं। कृष्णजी देखते ही रह गए।

कोई भी जवाब नहीं दिया, परंतु मनमें निर्णय कर लिया कि *'इन सभीकी शंका तो मुझे दूर करनी ही पडेगी।'*

''सिर भयंकर दुःख रहा है,'' एक दिन कृष्ण ने शिकायत की और रानीयां चंदन घिसकर विलेपन करने लगी। फिर भी ठीक नहीं हुआ। वैद्यो को बुलाया गया, फिर भी वो ही हालत। आखिर कंटाले हुए नारदजी को एक विचार सुझा। 'अरे, भगवान को तो पता ही होगा कि इसकी दवा क्या है?' इसलिए नारदजी तो दौडे कृष्ण के पास।

''प्रभु आप ही इसकी औषधी बताईये ना।''

सिर थामकर महान कलाकार कृष्ण बोले ''मेरे भक्त के पैरो में लगी मिट्टी अगर कोई भक्त दे और वो मेरे मस्तक के उपर लगाने में आये, तो मेरा सिर ठीक हो सकता है।''

''अरे ये कौन सी बडी बात है? दुनियां में आपके हजारो-लाखो भक्त है। ऐसी मिट्टी तो तुरंत ही मिल जाएंगी। मैं स्वयं ही जाकर लेकर आता हुँ'', कहकर हर्ष से भरे वो नारदजी तो दौडे मिट्टी लाने के लिए।

अभी तो नजदीक में ही थे कि उनको विचार आया *'मैं स्वयं भी तो प्रभु का परम भक्त हुँ। सतत नारायण का जाप*

जपता हुँ। तो मेरे पैरो में लगी मिट्टी ही दे देता हुँ ना?' विचार करने को तो कर लिया, परंतु अचानक ही उनको ख्याल आया कि उन्होंने गंभीर भूल की है। खुद के पैरो में लगी मिट्टी प्रभु के मस्तक पर किस प्रकार लगा सकते हैं? उसका विचार भी कैसे कर सकते है? ये तो कैसा भयानक पाप है। शास्त्रो में तो लिखा है कि 'अपने पैरो की मिट्टी अगर प्रभु के मस्तक के उपर लगायी जाये तो अपनी नरक निश्चित रूप से है।'

नारदजी वापस मुडे। उन्होंने निर्णय बदल दिया... उन्होंने स्वयं के बदले दूसरे भक्त की धूल देने का निर्णय किया और खोज में निकल पडे। परंतु सभी भक्तो ने नारदजी जैसा ही विचार किया, 'ऐसा घोर पाप कौन करेगा?' और सभी ने मना कर दिया। आखिर नारदजी थक गये। उनको एहसास हो गया कि यह मिट्टी कितनी दुर्लभ है। अंत में तो उन्होंने लक्ष्मी-रूक्मणी के पास भी मांग कर ली। परंतु वो तो कृष्ण की परम भक्ताओं में से थी, वो कैसे इस बात पर हाँ कहें?

''क्युं नारदजी! अभी तक आपको मिट्टी नहीं मिली? मेरे सिर का दर्द आप कब मिटाओंगे?'' खुद के हाथो से सिर दबाते हुए श्री कृष्ण बोले।

सिर नीचे करके नारदजी ने जवाब दिया ''प्रभु! आपके भक्त साफ साफ मना कर रहे है। भगवान के मस्तक पर लगाने के लिए अपने पैरो की मिट्टी...नहीं नहीं! घोर पाप...''

''तो फिर मेरे इस दर्द का क्या?''

नारदजी मौन।

''वृंदावन गये थे आप नारदजी?'' कृष्ण बोले।

भडक उठे थे नारदजी। वृंदावन और गोपीओं के नाम से ही उनको अेलर्जी हो गयी थी, फिर भी कुछ नहीं बोले नारदजी।

''राधा को पूछा था? गोपीओ को पूछा था?'' कृष्ण ने फिर से प्रश्न किया।

अब तो अंदर से एकदम जल उठे नारदजी। दो टके की भी जिनकी किंमत नहीं ऐसी गाँव की रहनेवाली, कच्चे घरो में रहनेवाली, सादे कपडे पहनने वाली, श्रृंगार बिना की, वो राधा और गोपीयों के पीछे पागल बने हुए मेरे नारायण खुद ही तो बुद्धिहीन... नारदजी का मन बहुत आगे बढने लगा।

''एक बार वहां भी जाकर तो आओ... शायद मेरी दवा मिल जाये'', नाटक के अभिनेता कृष्ण ने प्रेरणा की और बिना मन के भी नारदजी पहुंच गये वृंदावन में।

आकाश में से उतरते 'नारायण' बोलते 'नारदजी' को देखते ही राधा-गोपीओं के आनंद की कोई सीमा न रही। आंखो में तोरण बंध गये आंसुओं के। अभी तो नारदजी ने जमीन पर पैर भी नहीं रखा था कि चारो तरफ से गोपीओं ने उनको घेर लिया।

''कैसे है हमारे प्राणेश्वर? प्रसन्न तो है ना? उनको शरीर में कोई तकलीफ तो नहीं है ना?'' गोपीओ के चेहरों की उत्सुकता को देखकर, आंखो के आँसुओ को देखकर, हृदय में उछलते भावो को देखकर नारदजी खुद भावविभोर हो गये। उनको लगा कि **'इन लोगों में ऐसा कुछ तो है, जो हमारे मे नही है। हम प्रभु को समर्पित है, प्रभु के सेवक है। ये सब कुछ सत्य ही है। फिर भी कुछ तो फर्क है, इनमे और हममे।'**

''हाँ! दूसरा सबकुछ तो ठीक है,'' नारदजी बोले, ''परंतु बहुत समय से उनके सिर में दर्द सतत हो रहा है। इसलिए उसकी दवा ढूँढने निकला हुँ।''

अभी तो इतना ही सुना था कि गोपीओ का मुख भारी चिंता में डूब गया। आंसुओं की धारा वेग से बहने लगी। जैसे कि कोई उनके प्राण छिन रहा हो, ऐसी वेदना वे अनुभव करने लगी। ये सबकुछ नारदजी साक्षात् देख रहे थे।

''दवा मिल गई?'' सभी का एक साथ प्रश्न....

''नहीं,'' छोटा सा जवाब....

''दवा क्या है? कहाँ से मिल सकती है?''

''प्रभु के भक्तो के चरणों की धूल ही दवा है, जो कोई भी भक्त देने को तैयार नहीं। अगर वो मिल जाये तो...'' नारदजी ने अपनी बात पूरी भी नहीं की, उतने में तो सभी गोपीयां अपने अपने पैरो को घीस-घीस कर धूल निकाल निकाल कर इकट्ठे करने लगी और दो ही मिनट में तो बहुत सी मिट्टी इकठ्ठा हो गई। ये ले लीजिये और जल्दी से जल्दी प्रभु को भिजवा दीजिए।''

नारदजी देखते रह गये।

''आपको थोडी बुद्धि है या नहीं? कुछ ध्यान है या नहीं? दुनियां का कोई भक्त अपने पैरों की मिट्टी देने को तैयार नहीं, क्योंकि यह मिट्टी प्रभु के मस्तक पर लगने वाली है। यानि ये तो सबसे बढा पाप है। इसलिए ही तो कोई भी मिट्टी दे नहीं रहा था। क्योंकि ऐसा करने वाला तो अवश्य ही नरक में जायेगा। तुम सब को नरक में जाना है क्या?'' नारदजी थोडे जोर से बोले।

खडाखड हँसने लगी गोपीयाँ। देखते रह गय नारदजी पागलों की तरह। विचित्र लगी उनको ये गोपीयाँ(!)

''नारदजी! हमारे प्राणेश्वर की प्रसन्नता से बढकर दूसरी कोई भी चीज इस दुनियां में हमने नहीं मानी। नरकगति में जाना पडेगा दु:खों को भोगना पडेगा, पाप लगेगा... ये सब हम देखते ही नहीं, विचार भी नहीं करते, स्वप्न में भी विचार नहीं करते।''

गोपीयों की निर्भय वाणी सुनकर नारदजी चकित हो गये। खुद में और गोपीयों में जमीन-आसमान का फर्क है, ये उनको समझ में आ गया।

''जाईये नारदजी! एक पल का भी विलम्ब मत करो। प्रभु के सिर का दर्द जल्दी मिटाओ।'' गोपीयों ने कहा और अंतर से गोपीओं को वंदन करके नारदजी उडे और पहुँचे श्री कृष्ण के पास... कृष्ण के हँसते हुए चेहरे को देखकर सबकुछ समझ मे आ गया।

म.सा.! कहानी यहां पूरी होती है। ये महान गोपीयों के महान वृंदावन की यह मिट्टी है.. मेरे लिये मेरा सर्वस्व है। हम तिलक करने के लिए जिस चंदन का उपयोग करते है ना, उसका नाम भी हम गोपीओ का नाम अमर करने के लिए गोपी चंदन बोलते है। ये मिट्टी का ढेला इसलिए ही आपको यादगिरी के लिए भेट रूप में देता हुँ।''

याद आ गये मुझे पालितणा के हजारों लाखो श्रद्धालु यात्रिक जो पालितणा के कंकर कंकर को पवित्रतम, पूजनीय मानते है। वहां के कंकर कंकर को सिद्ध का स्थान मानते है। हां! मैं साधु होने से ऐसा द्रव्य परिग्रह मेरे लिए उचित नही था। फिर भी मैने तत्काल वो पत्थर ले लिया। 2-4 दिनीं के बाद उसका उचित निकाल भी कर दिया। संयम जीवन की मेरी मर्यादाओं को तो मुझे समझनी ही पडती है ना?

बस अभिजितभाई की आत्मकथा तो यहां पूरी होती है।

1. किसी को उनसे परिचय करना हो, तो मुझे बताईयेगा... बासुरी करा दुँगा। परंतु अगर आपको उनसे रूबरू मिलना हो तो शायद वृंदावन जाना पडेगा।

2. अगर एक अजैन संसारी इतना अपरिग्रही बन सकता है, तो अपने जैन श्रावक क्या करेंगे? और हम साधु साध्वीजी क्या करेंगे?

3. अगर एक अजैन संसारी संपूर्ण जिंदगी के लिए ब्रह्मचर्य का धारक बन सकता है, भगवान को हृदय में बिठाने के बाद किसी

और को दिल में नही बिठाने की दृढता रख सकता है, तो अपने जिनेश्वर के भक्त और हम महाब्रह्मचारी साधु- साध्वीजी निर्मल ब्रह्मचर्य के धारक बनेंगे या नहीं ?

4. अपने गुरु की इच्छा पूरी करने के लिए 50 लाख के लोन की जवाबदारी अपने उपर लेने वाले इस युवान को देखकर हम इतना तो संकल्प करें कि 'हम अपने गुरु को समर्पित रहेंगे। उनकी आज्ञा-इच्छा मानेंगे, उसमे कोई भूल नहीं होने देंगे।'

5. अनित्य भावना को भाकर इन्होंने वैराग्य पाया। अपने पास तो प्रभु की दी हुई बारह भावना है वैराग्य को उत्पन्न करने की। और उसका निरूपण करने वाले शांतसुधारस जैसे अनमोल ग्रंथ है हमारे पास। तो इतना तो करें कि शांतसुधारस पढे, उसका अर्थ समझे, उसका चिंतन मनन करें, पू.आ.भद्रगुप्तसूरिजी म.सा. की इस ग्रंथ की अद्‌भूत विवेचन वाली पुस्तक पढे। गुजराती- हिन्दी दोनो भाषाओं में है, लाइब्रेरी में मिल जाएगी। अमदाबाद -कोबा जैन ज्ञान भण्डार मे तो अवश्य मिलेगी।

बस वैसे तो उत्तम आत्मा इस प्रकार के कोई भी उपदेश के बिना ही ऐसे प्रसंगो से सबकुछ समझ जाते है, परंतु इस काल

में मंद क्षयोपशम और मंद वैराग्य वाले होने से स्पष्ट भाषा में उपदेश देना जरुरी बन जाता है, इसलिए 5 हित शिक्षाएँ उपर लिखी है।

मेरा प्रचंड सौभाग्य है कि 'मुझे जैनों मे तो उत्तम कोटि की विभूतियां मिल ही रही है, साथ ही साथ अजैन में भी ऐसी ही विभूतियां मिल रही है और हाँ।'

अंत में एक प्रेरणा करनी तो रह गयी। महोपाध्याय यशोविजयजी महाराज द्वारा रचित 10 गाथा की सज्झाय **'जैन कहो क्यु...'** ये याद करना। इसका अर्थ बराबर समझना। नहीं समझ में आये तो मेरे जैसे को पूछना। फिर आपकी दृष्टि ही बदल जायेंगी। फिर सच्चे जैन को एकदम सरलता से पहचान सकोंगे।

जय श्री कृष्ण...!!!

ये अंतिम वाक्य पढकर जिसको गुस्सा आये, उनको सच में ज्यादा से ज्यादा डीप में जाने की जरुरत है। **तुच्छबुत्ति वाले आत्म कल्याण कैसे करेंगे?**

प्रभु के प्रेम में पागल होकर,
प्रेयसी के प्रेम को तोडने वाले...

प्रभु को अपना सर्वस्व बनाकर,
मोह के पाश को तोडने वाले...

प्रभु के साथ तन्मय होकर, खुद
के संसार के बंधनो को तोडने वाले...

सभी भक्तों को यह पुस्तिका समर्पित है...

मु.गुणहंस वि.म.सा.
दि:06.05.2018
गुजराजी वाडी, चेन्नई
1.30 pm

तत्त्व TWILIGHT SERIES

जिनशासन में ENTRY PASS

महोत्सव या मोहोत्सव

मुझे देश श्रमण का मिलना रे..

अमृतवेल

The Way of Legal Murder

सुपात्रदान

श्रुत Messenger

शा सुरजमलजी सरेमलजी दुगरगौत्र चौहान (तखतगढ़)

कथा Classic Series

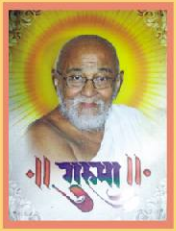

गुरु माँ

सद्गुरु

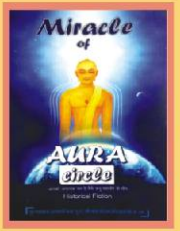

Miracle

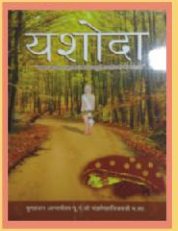

यशोदा

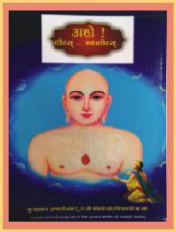

अहोवीरं

दक्षिण भारत

चेन्नई के चमकते सितारे

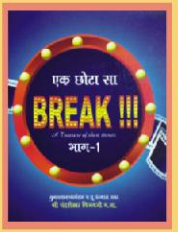

एक छोटा सा- ब्रेक